डाउनलोड मुद्रण

अ+ अ-

बाल साहित्य

आजाद परिंदा

शादाब आलम

खुले गगन में जिंदा हूँ मैं,
इक आजाद परिंदा हूँ मैं।

लंबी-लंबी अपनी राहें,
उड़ूँ हवा में खोले बाँहें।

घूमूँ टहलूँ जाऊँ कहीं भी,
उछलूँ नाचूँ, गाऊँ कहीं भी।

किसी तरह का भी ना डर है,
सारी दुनिया अपना घर है।

कभी दूर तो कभी बगल में,
कभी झोपड़ी कभी महल में।

मंदिर-मस्जिद व गुरद्वारे,
नदी, समंदर, झील किनारे।

कभी लोटता रहूँ रेत में,
कभी खेलता फिरूँ खेत में।

पर्वत की चोटी को छूलूँ,
मस्त पवन के झूले झूलूँ।

बाग-बगीचों में मैं जाऊँ,
अपनी मर्जी के फल खाऊँ।

झरने का मीठा जल पीता,
इसी तरह मैं हर दिन जीता

शीर्ष पर जाएँ

डाउनलोड मुद्रण

अ+ अ-

बाल साहित्य

अब्दुल चाचा का छप्पर

शादाब आलम

जर्जर हालत में है, अपने
अब्दुल चाचा का छप्पर।

चले हवा जब सर-सर-सर-सर
काँप उठे यह थर-थर-थर-थर
आँधी-अंधड़ मारा करती,
हैं इसको ठोकर-टक्कर।

बिजली चमके चम-चम-चम-चम
पानी बरसे झम-झम-झम-झम।
जगह-जगह से टपक रहा यह
दुख में डूबा है घर-भर।

चूल्हा-बर्तन, कपड़े-बिस्तर
टप-टप पानी चूता इन पर।
घर में कीचड़-पानी होने
से पनपें मक्खी-मच्छर।

दो घर होते अपने तो मैं
दे देता इक चाचा को मैं।
फिर उनके घर की हालत, न
बारिश कर पाती बदतर।

शीर्ष पर जाएँ

डाउनलोड मुद्रण

अ+ अ-

उस्ताद जी

शादाब आलम

रोज शाम को मुझे पढ़ाने
घर आते उस्ताद जी।

उन्हें देखकर बिल्कुल भी मैं
न डरता-घबराता
बस्ता और किताबें अपनी
खुशी-खुशी ले आता।
छड़ी नहीं, मुस्कान साथ में
हैं लाते उस्ताद जी।

मेरे सभी सवालों को वह
झटपट हल कर देते
ज्ञान भरी बातों से मेरा
नन्हा मन भर देते।
अच्छे-से हर एक विषय को
समझाते उस्ताद जी।

कहते बस्ता बोझ नहीं है
इसमें भरा खजाना
विद्यालय की राह पकड़कर
आसमान छू आना।
हर दिन मुझको नया हौंसला
दे जाते उस्ताद जी।

शीर्ष पर जाएँ

डाउनलोड मुद्रण

अ+ अ-

ऐसे मुझे खिलौने ला दो

शादाब आलम

ऐसे मुझे खिलौने ला दो
जैसे मैं बतलाऊँ पापा।

ऐसी मोटरगाड़ी जो बस
चाभी भरते दौड़ लगाए
तेल पिए न बिजली खाए
शोर करे न धुआँ उड़ाए।
उसे चलाकर रोज मजे-से
विद्यालय मैं जाऊँ पापा।

ऐसा प्यारा-सा गुड्डा जो
छूते ही मुझसे बतियाए
खुश देखे मुझको, मुस्काए
रूठूँ, तो आँसू टपकाए
लगे नाचने ठुमक-ठुमककर
ताली अगर बजाऊँ पापा।

एक पतंग हो खूब बड़ी जो
डोर पकड़ते ही लहराए
आसमान को छूकर आए
बारिश में भी उड़ती जाए।
सभी पतंगें काट गिरा दे
जब मैं पेंच लड़ाऊँ पापा

शीर्ष पर जाएँ